Date - 16 April 2022

मेगालिथ: असम

- हाल ही में, पुरातत्वविदों ने असम के हसाओ जिले में चार स्थलों पर 65 बड़े बलुआ पत्थर के कलशों (मेगालिथ) की पहचान की है, जिनके बारे में माना जाता है कि इनका उपयोग अनुष्ठानों के लिए किया जाता है।
- इससे पहले वर्ष 2020 में, राज्य पुरातत्व विभाग, चेन्नई ने तमिलनाडु के इरोड जिले में कोडुमानल उत्खनन स्थल से 250 केयर्न-सर्किलों की पहचान की थी।

असम के महापाषाण:

- कुछ जार लंबे और बेलनाकार होते हैं, जबकि अन्य आंशिक रूप से या पूरी तरह से जमीन में दबे होते हैं।
- उनमें से कुछ तीन मीटर तक ऊंचे और दो मीटर चौड़े थे। कुछ कलशों में सजावट के लिए नक्काशी की गई है, जबकि अन्य सादे हैं।

असम में मेगालिथ का इतिहास:

- असम में पहली बार 1929 में ब्रिटिश सिविल सेवकों जेम्स फिलिप मिल्स और जॉन हेनरी हटन द्वारा दीमा हसाओ, डेरेबोर (अब होजाई डोबोंगलिंग), कोबाक, कार्तोंग, मोलोंगपा (अब मेलांगे पुरम), नडुंगलो और बोलसन (अब नुचुबांग्लो) । कलश देखा।
- वर्ष 2016 में दो और स्थलों की खोज की गई। वर्ष 2020 में, इतिहास और पुरातत्व विभाग द्वारा उत्तर-पूर्वी पहाड़ी विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय में चार और स्थलों की खोज की गई।
- 546 कलश एक स्थल, नुचुबांग्लो, जो विश्व में इस प्रकार का सबसे बड़ा स्थल था, से प्राप्त हुए।

निष्कर्षों का महत्व:

- हालांकि 'जार' को अभी वैज्ञानिक रूप से दिनांकित नहीं किया गया है, शोधकर्ताओं ने कहा कि लाओस और इंडोनेशिया में पाए जाने वाले पत्थर 'कलश' को एक साथ देखा जा सकता है।

Yojna IAS

- तीनों स्थलों पर पाए जाने वाले 'कलश' के बीच सांकेतिक और रूपात्मक समानताएं हैं।
- यह भारत में पूर्वोत्तर को छोड़कर कहीं और नहीं देखा गया है, जो इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि एक समय में समान सांस्कृतिक प्रथाओं वाले लोगों का एक समूह लाओस और पूर्वोत्तर भारत के बीच एक ही भौगोलिक क्षेत्र पर हावी था।
- लाओस स्थल पर किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि 'कलश' स्थल दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में स्थित थे।
- लाओस में शोधकर्ताओं ने कहा कि पत्थर के 'कलश' और मुर्दाघर की प्रथाओं के बीच एक "मजबूत संबंध" था, जिसमें मानव कंकाल के अवशेष 'कलश' के आसपास दफन पाए गए थे।
- इंडोनेशिया में 'कलश' का कार्य अस्पष्ट है, हालांकि कुछ विद्वान मुर्दाघर के लिए इसी तरह की भूमिका का सुझाव देते हैं।
- असम और लाओस और इंडोनेशिया के बीच 'संभावित सांस्कृतिक लिंक' को समझने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

मेगालिथ / मेगालिथ:

- महापाषाण या 'महापाषाण' एक बड़ा प्रागैतिहासिक पत्थर है जिसका उपयोग या तो अकेले या अन्य पत्थरों के संयोजन में संरचनाओं या स्मारकों के निर्माण के लिए किया गया है।
- महापाषाण कब्रगाहों या स्मारक स्थलों के रूप में बनाए गए थे।
- पूर्व में वास्तविक दफन अवशेषों वाले स्थल जैसे डोलमेनॉइड सिस्ट (बॉक्स के आकार के पत्थर के दफन कक्ष), केयर्न सर्कल (परिभाषित परिधि वाले पत्थर के घेरे) और कैपस्टोन (मुख्य रूप से केरल में पाए जाने वाले विशिष्ट मशरूम के आकार के दफन) ।
- नश्वर अवशेषों वाले कलश या ताबूत आमतौर पर टेराकोटा से बने होते थे और महापाषाण में मेन्हीर जैसे स्मारक शामिल होते हैं।
- भारत में पुरातत्वविदों ने लौह युग (1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व) में अधिकांश महापाषाणों का पता लगाया है, हालांकि कुछ स्थल लौह युग से पहले 2000 ईसा पूर्व के हैं।
- महापाषाण भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हुए हैं। अधिकांश महापाषाण स्थल प्रायद्वीपीय भारत में पाए जाते हैं, जो महाराष्ट्र (मुख्य रूप से विदर्भ), कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में केंद्रित हैं।

Yojna IAS

ललित कला अकादमी और संगीत नाटक अकादमी

- उपराष्ट्रपति ने देश के 43 प्रख्यात कलाकारों (4 फेलो और 40 पुरस्कार विजेताओं) को वर्ष 2018 के लिए संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप और संगीत नाटक पुरस्कार प्रदान किया है।
- उन्होंने वर्ष 2021 में 23 लोगों (3 फेलो और 20 राष्ट्रीय पुरस्कार) को ललित कला अकादमी फैलोशिप और राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्रदान किए।

संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप (अकादमी रत्न) और पुरस्कार:

संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप:

- संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप राष्ट्रीयता, नस्ल, जाति, धर्म, पंथ या लिंग के भेद के बिना संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रदान किया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।
- अकादमी की फैलोशिप सबसे प्रतिष्ठित और दुर्लभ सम्मान है, जो एक बार में अधिकतम 40 लोगों को दिया जा सकता है।
- अकादमी फेलो के सम्मान में एक ताम्रपत्र और अंगवस्त्रम के साथ रु.3,00,000/- का नकद पुरस्कार शामिल है।

संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार:

- संगीत, नृत्य, रंगमंच, पारंपरिक/लोक/जनजातीय संगीत/नृत्य/रंगमंच, कठपुतली और प्रदर्शन कला आदि में समग्र योगदान/छात्रवृत्ति के क्षेत्र में कलाकारों को पुरस्कार दिए जाते हैं।
- अकादमी पुरस्कार में रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है। 1,00,000/- ताम्रपत्र और अंगवस्त्रम के साथ।

ललित कला अकादमी पुरस्कार क्या है?

- कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए व्यक्तियों को सम्मानित करने के लिए राष्ट्रीय ललित कला अकादमी पुरस्कार दिए जाते हैं। पुरस्कार विजेताओं का चयन अकादमी द्वारा नामित न्यायाधीशों/निर्णायकों के एक सम्मानित पैनल द्वारा किया जाता है।

संगीत नाटक अकादमी क्या है?

- संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक के लिए भारत की राष्ट्रीय अकादमी है।
- 1952 में (तत्कालीन) शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के एक प्रस्ताव द्वारा डॉ. पी.वी. राजमन्नार इसके पहले अध्यक्ष बने।
- यह वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है और इसकी योजनाओं और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए सरकार द्वारा पूरी तरह से वित्त पोषित है।

Yojna IAS

- अकादमी प्रदर्शन कला के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों और परियोजनाओं की स्थापना और रखरखाव करती है। कुछ महत्वपूर्ण हैं:
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली की स्थापना 1959 में हुई थी।
- इम्फाल में जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी – 1954।
- कथक केंद्र (राष्ट्रीय कथक नृत्य संस्थान) नई दिल्ली – 1964 में।
- कुटियाट्टम (केरल का संस्कृत थिएटर), पूर्वी भारत का छऊ नृत्य, असम की सत्रीय परंपरा आदि को समर्थन देने के लिए राष्ट्रीय परियोजनाएं।

ललित कला अकादमी क्या है?

- अकादमी का उद्घाटन 5 अगस्त, 1954 को तत्कालीन माननीय शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने किया था।
- अकादमी को वर्ष 1957 में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत वैधानिक अधिकार दिए गए थे।
- अपनी स्थापना के बाद से, यह भारतीय कलाकारों के रचनात्मक प्रयासों को बढ़ावा देकर और उनकी कला को बड़ी संख्या में लोगों के लिए सुलभ बनाकर पूरे देश की सेवा कर रहा है, इस प्रकार दृश्य के दायरे में आने वाली पूरी संस्कृति की संवेदनशीलता को परिभाषित और परिभाषित करता है। कलाओं को पुनर्परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

Swadeep Kumar

Yojna IAS